है, उसके अंदर स्व से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है, वह शुद्ध रूप से चेतनस्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है।'

(ग) 'एकदम अंदर के प्रकोष्ठ में चामुंडा रूप धारिणी मंसादेवी स्थापित थी। व्यापार यहाँ भी था।'

9. 'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
10. 'हे ईश्वर! उसने कब सोचा था कि मनोकामना का मौन उद्‌गार इतनी शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा-आशय स्पष्ट कीजिए।'

भाषा-शिल्प

1. इस पाठ का शिल्प आख्याता (नैरेटर-लेखक) की ओर से लिखते हुए बना है–पाठ से कुछ उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।
2. पाठ में आए पूजा-अर्चना के शब्दों तथा इनसे संबंधित वाक्यों को छाँटकर लिखिए।

योग्यता-विस्तार

1. चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी पढ़िए और उस पर बनी फ़िल्म देखिए।
2. हरिद्वार और उसके आसपास के स्थानों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. गंगा नदी पर एक निबंध लिखिए।
4. आपके नगर / गाँव में नदी-तालाब-मंदिर के आसपास जो कर्मकांड होते हैं उनका रेखाचित्र के रूप में लेखन कीजिए।

© NCERT not to be republished

शब्दार्थ और टिप्पणी

गोधूलि बेला – संध्या का समय
हुज्जत – बहस
ब्यालू – शाम का भोजन
नीलांजलि – विशेष प्रकार का दीपक जिसे प्रज्ज्वलित कर आरती के समय देवमूर्ति के सामने घुमाया जाता है।
मनोरथ – मन की इच्छा, अरमान
बेखटके – बिना किसी रुकावट के
कलावा – कलाई में बाँधी गई लाल डोरी, मौली
प्रकोष्ठ – कक्ष, कमरा
झुटपुटा – कुछ-कुछ अँधेरा,
अस्फुट – अस्पष्ट, कुछ-कुछ उजाला
आत्मसात – अपने में समा लेना
जी खोलकर देना – उदारतापूर्वक खर्च करना
नज़रें बचाना – एक दूसरे से कतराना
नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना, गायब होना